



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(68): 113-116

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

हैपी शर्मा

शोधार्थी, संस्कृत विभाग,

VVRIS&IS, पंजाब विश्वविद्यालयः,

साधु आश्रम, होशियारपुर

रामायण और श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य में साम्यवृत्त विवेचन की समीक्षा

हैपी शर्मा

रामायण संस्कृत साहित्य-परम्परा का एक विलक्षण आर्ष महाकाव्य है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित अमर-कृति 'रामायण' को लौकिक संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य है। रामायण में श्रीराम की कथा के साथ-साथ मानव जीवन, धर्म, नीति और मानवीय मूल्यों का व्यापक चित्रण मिलता है। इसी कारण यह कपितय परवर्ती काव्यों का प्रेरणा स्रोत होने के साथ-साथ भारतीय समाज की धर्मपोथी, भारतीय आचार-विचार, संस्कार संबंधों का आदर्श ग्रन्थ तथा भारत की चिरन्तन भक्ति-भावना, ज्ञान भावना होने के कारण उपजीव्य ग्रन्थ बना। रामायण की कथा को आधार बनाकर कविवर उमाशंकर शर्मा ऋषि ने श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य की रचना की। इसमें कविवर ने मूल कथानक का पुनर्संयोजन करते हुए नवीन काव्यात्मक दृष्टि से सूत्रपात है। श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य की रामायण की कथा के आधार पर समीक्षा करने से कथानक में कतिपय समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उनमें से कुछ साम्यताओं का विवेचन अधोलिखित प्रस्तुत है।

1. अयोध्या नामक नगरी का वर्णन रामायण और श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य दोनों में प्राप्त होता। रामायण में प्राप्त वर्णन यथा-

अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोकविश्रुता ।

मनुना मानवेन्द्र एम या पुरी निर्मिता स्वयम्॥¹

अर्थात् उस जनपद में अयोध्या नाम की एक नगरी है जो समस्त लोगों में विख्यात है। श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य में साकेत अर्थात् अयोध्या नगरी के विषय में कहा गया है-

नमामि देवीं सरयूं सरिद्वरां कलेर्मलं यामवलोक्य नश्यति।

तटे च यस्या नगरीषु वन्दिता विशिष्य साकेतपुरी प्रशस्यते॥²

अर्थात् इस जम्बू वृक्ष को सर्वथा आवृत्त किए हुए, लवण समुद्र से घिरे, भारत क्षेत्र में दृढ उत्सवों से परिपूर्ण व निवास के लिए किन्नर देवों को भी प्रिय अयोध्या नामक नगरी है।

2. वाल्मीकि रामायण में वर्णित है कि अयोध्या नाम की नगरी का राजा दशरथ था। यथा-

तां सत्यनामां दृढतोरणार्गलां गृहैर्विचित्रैरुपशोभितां शिवाम्।

पुरीमयोध्यां नृसहस्रसंकुलां श्वास वै शक्रसमो यही पति॥³

जैसे इस नगरी का नाम 'अयोध्या' सत्य और सार्थक था, जो विचित्र गृहों से सदा सुशोभित होती थी। ऐसी कल्याणकारी पुरी का इंद्र के समान तेजस्वी राजा दशरथ न्यायपूर्वक यहाँ शासन करता था। इसी प्रकार कविवर उमाशंकर शर्मा ऋषि ने भी अनुसंधेय महाकाव्य में राजा दशरथ का वर्णन किया है। यथा-

नवो महीपः नितान्तपीडितो नृपः कुमारं परिरक्षितुं प्रजाः॥⁴

यथा सुरेन्द्रोऽपि सदाकदाग्रहीत् सहायतामस्य दुरासदे रणे॥

अर्थात् नवीन राजा दशरथ अपनी इन्द्रियों पर संयम रखने वाले थे। पृथ्वी पर प्रशासन करने में वे मनु के समान हुए। यदा कदा देवराज इंद्र भी उनकी सहायता कठिनाई भरे युद्धों में लिया करते थे।

3. रामायण में वर्णन मिलता है कि राजा दशरथ के द्वारा ऋष्यशृङ्ग से एक पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया गया जिसके फलस्वरूप राम, भारत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म हुआ।

Correspondence:**हैपी शर्मा**

शोधार्थी, संस्कृत विभाग,

VVRIS&IS, पंजाब विश्वविद्यालयः,

साधु आश्रम, होशियारपुर

स चाप्यपुत्रो नृपतिस्तस्मिन् काले महाद्युतिः ।

अयजत् पुत्रियामिष्टिं पुत्रेप्सुररिसूदनः॥⁵

अर्थात् इस समय वह शत्रुसूदन महानतेजस्वी नरेश पुत्रहीन हैं होने के कारण पुत्र प्राप्ति की इच्छा से पुत्रेष्टि यज्ञ करवा रहे थे।

उपयुक्त वृत्तान्त श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य में निम्न प्रकार से उपलब्ध होता है-

राजा दशरथ ने श्रुति परम्परा से एक बार यह सुना कि ऋषिश्रृंग नाम के एक मुनि पुत्रेष्टि नामक यज्ञ के जानकार के रूप में बहुत प्रतिष्ठित हैं। उस यज्ञ की प्रक्रिया को जानने वाले उन्हीं मुनिश्रेष्ठ के निर्देशन में राजा ने सन्तान प्रदान करने वाली उस पुत्रेष्टि यज्ञ को आरम्भ किया। यथा-

राज्ञैकदा श्रुतिपरम्परया श्रुतोऽयं पुत्रेष्टिविखलु समादृत ऋष्यश्रृंगः।

निर्देशने मुनिवरस्य विधानवेत्तुस्तामिष्टिमारभत सन्ततिदायिनीसः॥⁶

4. राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का राजा दशरथ के घर में जन्म लेने का वर्णन दोनों कृतियों में उपलब्ध होता है यथा वाल्मीकि रामायण में वर्णित है-

विष्णोरर्धं महाभागां पुत्रमैश्वराकुनन्दनम्।

लोहिताक्षं महाबाहुं राकोष्ठं दुन्दुभिस्वनम्॥⁷

भरतों नाम कैकेय्यां जज्ञे सत्यपराक्रमः।

साक्षाद् विष्णेश्वरतुर्भागः सर्वैः समचदितो गुणैः॥

अतः लक्ष्मण शत्रुघ्नौ सुमित्राजनयत् सुतौ। वीरौ सर्वास्त्रकुशलौ विष्णोरर्धसमन्वितौ॥⁸

अर्थात् वे विष्णुस्वरूप खीर के आधे भाग से प्रकट हुए कौसल्या के पुत्र राम इक्ष्वाकु कुल का आनंद बढ़ाने वाले थे और उनके बाद कैकई के सत्यापराक्रमी भरत का जन्म हुआ। इसके बाद रानी सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न दो पुत्रों को जन्म दिया।

कविवर कविवर उमाशंकर शर्मा ऋषि ने भी स्वकीय महाकाव्य में लिखा है कि चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को शुभ मुहूर्त में, दोपहर में साकेतपुरी के राजाजीवन की विभूति के रूप में अनन्त भावों वाले राम आदि चार शिशुओं ने जन्म प्राप्त किया।

यथा-मासे मधौ धवलपक्षगते नवम्यां मध्याह्नकालमनुसृत्य शुभेमुहूर्ते।

साकेत-राजीवनस्य विभूतिरूपाः रामादयों जननमापुरनन्तभावाः॥⁹

अन्यदपि

कौसलराज की पुत्री के पुत्र के रूप में राम हुए। कैकेयी के पुत्र-रूप में भरत का जन्म हुआ जो स्वरूपतः राम के ही समान थे। सुमित्रा के पुत्र के रूप में यमल पुत्र हुए जो पृथ्वी में लक्ष्मण और शत्रुघ्न के नाम से विख्यात हुए।¹⁰

5. रामायण में वर्णन मिलता है कि सीता स्वयंवर के समय राजा जनक की रखी हुई शर्त के अनुसार शिव धनुष को तोड़ने वाले को ही सीता पति के रूप में धारण करेंगी। यथा-

पश्यतां नृसहस्राणां बहूनां रघुनन्दनः।

आरोपयत् स धर्मात्मा सलीलमिव तहनुः॥

अशिपयित्वा गौर्वी च पुश्यामास तहनुः।

तद् वभगज धनुर्मध्ये तर श्रेष्ठो महायशाः॥¹¹

अर्थात् श्रीराम ने उस धनुष को बीच से पकड़कर लीला पूर्वक उठा लिया और खेल-सा करते हुए उसपर प्रत्यंचा चढ़ा दी। प्रत्यंचा चढ़ाकर महायशस्वी नरश्रेष्ठ राम ने जैसे ही उसे खींचा त्यो हो वह बीच से ही टूट गया।

कविवर कविवर उमाशंकर शर्मा ऋषि ने भी स्वकीय महाकाव्य में लिखा है कि अपने गुरु के आज्ञापालक श्री राम ने उनका निर्देश पाते ही उस धनुष को खंचा और उस पर डोरी चढ़ाकर ऐसा तान लिया कि गीच से धनुष टूट गया। यथा-

“लब्ध्वा गुरोराश्रवभूत-रामो निर्देशमेतद्धनुराचकर्ष।

मौर्वीं समारोप्य च पूरयित्वा मध्ये धनुर्भजनमप्यकार्षीत्॥¹²

6. महाराज दशरथ द्वारा पुत्र राम को राज्य सौंपने का वर्णन दोनों कृतियों में उपलब्ध होता है। रामायण में विवेचन है कि- न किंचिन्मम कर्तव्यं तवान्यत्राभिषेचनात्। अतो यत्त्वामहं ब्रूयां तन्मे त्वं कर्तुमर्हसि॥¹³

राजा दशरथ कहते हैं कि राम तुम्हें युवराज पद पर अभिषिक्त करने के सिवाय और कोई भी कर्तव्य मेरे पास विशेष नहीं रह गया है। अतः मैं तुमसे जो कुछ कहूँ मेरी आज्ञा का तुम्हें पालन करना चाहिए। इस तथ्य को को कविश्रेष्ठ उमाशंकर शर्मा ऋषि ने भी अपने शब्दों में वर्णित किया है। यथा-

एवं लोकप्रिये रामे प्रजा दशरथो मुदा। विमृश्य गुरुभिः सार्धं वसिष्ठादिभिरात्मवान्॥

युवराजपदं रामे निधातुं समचिन्तयत्। दृढां राज्यधुरं वोढुं समर्थे क्षमया समे॥¹⁴

श्री राम के लोकप्रिय होते जाने पर अपने आप पर संयम रखने वाले राजा दशरथ ने वसिष्ठ आदि गुरुओं के साथ विचार-विमर्श करके युवराज का पद उन श्रीराम को देने का निश्चय किया जो राज्य की दृढ़ धुरा को संभालने में समर्थ एवं सहनशीलता में पृथ्वी के समान थे।

7. रामायण में वर्णन है कि रावण ने अपने मामा मारीच को मृग का रूप धारण करके पंचवटी में जाने और सीता हरण की एक योजना बनाई थी। यथा-

प्रलोभनार्थं वैदेह्या नानाधातुवित्रितम्।

विचरन् गच्छते सम्यक् शाद्वलानि समन्ततः॥¹⁵

अदृष्टपूर्वं दृष्ट्वा तं नानारत्नमयं मृगम्।

विस्मयं परमं सीता जगाम जनकात्मना॥¹⁶

अर्थात् सीता को लुभाने के लिए विविध धातुओं से चित्रित मनोहर एवं दर्शनीय रूप बनाकर वह निशाचर उसे रमणीय वन तथा श्री राम के उसे आश्रम को प्रकाशित करता हुआ सब और उत्तम घासों को चरने और विचरने लगा। सीता ने वैसा मृग पहले कभी भी नहीं देखा था। वह नानाप्रकार के रत्नों का ही बना जान पड़ता था उसे देखकर सीता को बड़ा विस्मय हुआ।

अनुसंधेय महाकाव्य में पूर्वोक्त वृत्तान्त का निम्न वर्णन प्राप्त होता है। रावण ने अपने मित्र मारीच से कहा कि तुम मेरी सहायता करने के लिए सुनहरे हरिण का रूप धारण करके वहां विचरण करो। यथा-

अवदद् दनुजेश्वरो हि तं प्रिय मारीच सहायको भव।

मृगरूपमवाप्य चाद्भुतं कनकाभं चर मायया स्वया॥¹⁷

जनकपुत्री सीता जी ने स्वर्ण के वर्ण वाले हरिण को अपनी कुटी के पास विचरण करते हुए देखा तो उन्होंने श्रीराम से पूछा कि क्या ऐसा सुन्दर मृग आपने कभी देखा है? श्री राम कहते हैं कि सुभग वस्तु सदा शुभ नहीं होती। ऐसी बात सुनकर सीता हठ कर बैठी और बात ही सिद्ध करने लगी।¹⁸

8. रामायण में वर्णन मिलता है की सीता का हरण करके जब रावण जा रहा था, तो उसका सामना पक्षी राज्य जटायु से होता है। रावण के प्रहार से वह घायल जटायु राम और लक्ष्मण को मिलता है तथा बताता है की सीता का हरण रावण के द्वारा किया गया है व मेरी इस हालात का कारण भी रावण ही है। यथा-

तं दीनं दीनया वाचा सफेनं रुधिरं वमन्। अभ्यभाषत पक्षी स रामं दशरथात्मजम् ॥

यामोषधीमिवायुष्मन्तन्वेषसि महावने। सा देवी मम च प्राणा रावणेनोभयं हतम्॥¹⁹

अर्थात् पक्षी राज जटायु अपने मुँह में फेन युक्त रक्त वमन करते हुए अत्यन्त दीन वाणी से श्रीराम से बोले कि उस देवी सीता को तथा मेरे इन प्राणों को भी रावण ने ही हर लिया।

अनुसंधेय महाकाव्य में पूर्वोक्त वृत्तान्त का निम्न वर्णन प्राप्त होता है। समीप में ही अवस्थित वृक्ष से पक्षिराज जटायु ने सीता जी का करुण क्रन्दन सुना। तुरन्त उसने अपनी चोंच से रावण के सि पर प्रहार किया। गिरने पर कुछ समय के लिय मूर्च्छित होकर उस दृष्टराज रावण ने सचेत होकर अपनी तलवार से पक्षिराज के दोनों पंख काट दिए।²⁰

9. रामायण में वर्णन मिलता है कि राम और लक्ष्मण सीता को खोजते हुए एक शबरी नामक भीलनी से मिलते हैं। यथा-

तौ तमाश्रममासाद्य द्रुमैर्बहुभिरावृतम्।

सुरम्यमभिवीक्षन्तौ शबरीमभ्युपेयतुः॥²¹

अर्थात् आश्रम की शोभा निहारते हुए वे दोनों भाई बहुसंख्यक, वृक्षों से घिरे हुए उस सुरम्य आश्रम पर जाकर शबरी से मिले।

अनुसंधेय महाकाव्य में वर्णन आता है कि वन में प्रभु के भक्त पद-पद पर सुलभ थे, उन्हीं में से एक कामना रहित वृद्धा शबरी भी थी। यथा-

कबन्धसंस्कार-पुरस्परं प्रभु पुनः शबर्याश्रममागतः क्रमात्,

वनेऽस्य भक्ताः सुलभाः पदे पदे, तदेषु वृद्धा शबरी च निःस्पृहा॥²²

श्री राम उसके आश्रम में गए। वहां पर श्रीराम और लक्ष्मण ने आतिथ्य सत्कार ग्रहण किया। शबरी ने कहा कि मेरी तपस्या फलीभूत हो गई। यथा- “उवाच सा राम तपः फलान्वितं”²³

उसने जीर्ण शरीर को त्याग दिया और सुरलोक में दुर्लभ पद पाया। यथा-

स्वजीर्णदिहं विजहौ गता पुनर्दिवं च लेभे खलु दुर्लभं पदम्॥²⁴

10. वाल्मीकि रामायण में वर्णन मिलता है कि हनुमान लंका में जाते हैं सीता से भेंट करते हैं तथा अशोक वाटिका से हनुमान को पकड़कर रावण की सभा में पेश किया जाता है। यथा-

अस्त्रेण हनुमान् मुक्तो नात्मानमवबुध्यते।

कृष्यमाणस्तु रक्षोभिस्तैश्च बन्धैर्निपीडितः॥

हन्यमानस्ततः क्रूरै रक्षसैः कालमुष्टिभिः।

समीपं राक्षसेन्द्रस्य प्राकृष्यत स वानरः॥²⁵

हनुमान यद्यपि अस्त्र के बन्धन से मुक्त हो गए थे तो भी उन्होंने ऐसा बर्ताव किया मानो वह इस बात को जानते ही ना हो। क्रूर राक्षस उन्हें बंधनों से पीड़ा देते हुए और कठोर मुक्कों से मारते हुए खींचकर ले चले इस तरह वह वानर वीर राक्षस राज रावण के पास पहुँचाये गये।

उपयुक्त वृत्तान्त श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य में भी निम्न प्रकार से उपलब्ध होता है-

अर्थात् उसके बाद हनुमान ने सीता जी को आश्वासन देने का समुचित समय देखा तथा समीप आ गए। यथा-

कालं ततः समुचितं हनुमानपश्यत्सीतां समाश्वसितुमागतवान् समीपम्॥²⁶

तदनन्तर ब्रह्मास्त्र के विनियोग वश उन्होंने स्वयं मेघनाद का बन्धन स्वीकार कर लिया। यथा-

‘बद्धस्तदस्त्रविनियोगवशात्स्वयं च’²⁷ तथा

मेघनाद विभिन्न मार्गों से उन्हें लेजाता हुआ रावण की सभा में प्रविष्ट करवरया। यथा-

‘मार्गेषु सम्प्रति पदातिरगात्स दैत्यः, कालेन रावणसभां प्रविवेश’²⁸

11. रामायण में वर्णन मिलता है कि राम और लक्ष्मण सीता को खोजते हुए एक शबरी नामक भीलनी से मिलते हैं। यथा-

तौ तमाश्रममासाद्य द्रुमैर्बहुभिरावृतम्।

सुरम्यमभिवीक्षन्तौ शबरीमभ्युपेयतुः॥²⁹

अर्थात् आश्रम की शोभा निहारते हुए वे दोनों भाई बहुसंख्यक, वृक्षों से घिरे हुए उस सुरम्य आश्रम पर जाकर शबरी से मिले।

अनुसंधेय महाकाव्य में वर्णन आता है कि वन में प्रभु के भक्त पद-पद पर सुलभ थे, उन्हीं में से एक कामना रहित वृद्धा शबरी भी थी। यथा-

कबन्धसंस्कार-पुरस्परं प्रभु पुनः शबर्याश्रममागतः क्रमात्,

वनेऽस्य भक्ताः सुलभाः पदे पदे, तदेषु वृद्धा शबरी च निःस्पृहा॥³⁰

श्री राम उसके आश्रम में गए। वहां पर श्रीराम और लक्ष्मण ने आतिथ्य सत्कार ग्रहण किया। शबरी ने कहा कि मेरी तपस्या फलीभूत हो गई। यथा- “उवाच सा राम तपः फलान्वितं”³¹

उसने जीर्ण शरीर को त्याग दिया और सुरलोक में दुर्लभ पद पाया। यथा-

स्वजीर्णदिहं विजहौ गता पुनर्दिवं च लेभे खलु दुर्लभं पदम्॥³²

12. वाल्मीकि रामायण में वर्णन मिलता है कि हनुमान लंका में जाते हैं सीता से भेंट करते हैं तथा अशोक वाटिका से हनुमान को पकड़कर रावण की सभा में पेश किया जाता है। यथा-

अस्त्रेण हनुमान् मुक्तो नात्मानमवबुध्यते।

कृष्यमाणस्तु रक्षोभिस्तैश्च बन्धैर्निपीडितः॥

हन्यमानस्ततः क्रूरैः राक्षसैः कालमुष्टिभिः।

समीपं राक्षसेन्द्रस्य प्राकृष्यत स वानरः॥³³

हनुमान यद्यपि अस्त्र के बन्धन से मुक्त हो गए थे तो भी उन्होंने ऐसा बर्ताव किया मानो वह इस बात को जानते ही ना हो। क्रूर राक्षस उन्हें बंधनों से पीड़ा देते हुए और कठोर मुक्कों से मारते हुए खींचकर ले चले इस तरह वह वानर वीर राक्षस राज रावण के पास पहुँचाये गये।

उपर्युक्त वृत्तान्त श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य में भी निम्न प्रकार से उपलब्ध होता है-

अर्थात् उसके बाद हनुमान् ने सीता जी को आश्वासन देने का समुचित समय देखा तथा समीप आ गए। यथा-

कालं ततः समुचितं हनुमानपश्यत्सीतां समाश्वसितुमागतवान् समीपम्³⁴

तदनन्तर ब्रह्मास्त्र के विनियोग वश उन्होंने स्वयं मेघनाद का बन्धन स्वीकार कर लिया। यथा-

‘बद्धस्तदस्त्रविनियोगवशात्स्वयं च’³⁵ तथा

मेघनाद विभिन्न मार्गों से उन्हें लेजाता हुआ रावण की सभा में प्रविष्ट करवरया। यथा-

‘मार्गेषु सम्प्रति पदातिरगात्स दैत्यः, कालेन रावणसभां प्रविवेश’³⁶

13.रामायण में वर्णन मिलता है कि राम के वनवास जाने की खबर जब भरत को मिलती है तो भरत बहुत दुखी होते हैं, राम को वन से वापस लाने के लिए वन में जाते हैं और उनसे मिलते हैं। यथा-

बाष्पैः पिहितकण्ठश्च प्रेक्ष्य रामं यशस्विनम्।

आर्येत्येवाभिसं कुश्य व्याहर्तुं नाशकत् ततः॥

शत्रुघ्नश्चापि रामस्य ववन्दे चरणौ रुदन्।

तावुभौ च समालिङ्गय रामोऽप्यश्रूण्यवर्तयत्॥³⁷

अर्थात् आँसुओं से भरत का गला भर गया और भाई राम की ओर देखकर वे हा! आर्य कहकर चीख उठे। फिर शत्रुघ्न ने भी रोते-रोते श्रीराम के चरणों में प्रणाम किया और राम ने उन दोनों को उठाकर छाती से लगा लिया था।

अनुसंधेय महाकाव्य में पूर्वोक्त वृत्तान्त का निम्न वर्णन प्राप्त होता है।

‘प्राप्यायोध्यां भरतममिलत्यासनेत्रो हि रामः’

अर्थात् अयोध्या पहुँचकर आँसू भरी आंखें लिये प्रभु श्रीराम सर्वप्रथम भरत जी से मिले।

अतः उपर्युक्त समीक्षा से स्पष्ट होता है कि दोनों रचनाओं में कथा-प्रवाह प्रभावमयी ढंग से अवलोकित होता है। श्रीरामानुकीर्तनम् महाकाव्य की रामायण की कथा के आधार पर समीक्षा करने पर ज्ञात होता है कि रामायण में वर्णित राम कथा का उपजीव्य ग्रन्थ रामायण है। कतिपय घटनाओं में साम्यता तो है परन्तु उनके प्रतिपदन में थोड़ा अन्तर है।

सन्दर्भ ग्रन्थः

1 वा.रा.बाल. 5-6

2 श्रीरामानु.1.15

3 वा.रा.बाल. 6-28

4 रामानु.1-52

5 वा.रा.बाल.16-9

6 श्रीरामानु.2.3

7 वा.रा.बाल.18-11

8 वहीं.18-14

9 रामानु. 2-22

10 वहीं, 2.23

11 वहीं. 67-16.17

12 वहीं, 3.27

13 वा.रा.अयो. 4-15

14 श्रीरामानु. 4.1-2

15 वा.रा.बाल.42-21

16 वहीं.42-35

17 श्रीरामानु.7.28

18 वहीं.7-31-32

19 वा.रा.बाल. 67-14.15

20 श्रीरामानु.7.47-48

21 वा.रा.बाल.74-5

22 श्रीरामानु. 8.10

23 वहीं.8-11

24 वहीं.8-12

25 वा.रा.सु. 48-51.52

26 श्रीरामानु.6.34

27 वहीं, 9.45

28 वहीं, 9.46

29 वा.रा.आर.74-5

30 श्रीरामानु.8.10

31 वहीं.8-11

32 वहीं.8-12

33 वा.रा.सु.48-51.52

34 श्रीरामानु.6.34

35 वहीं, 9.45

36 वहीं, 9.46

37 वा.रा.अयो.99.39ण्40